**याद तो आती है हमें**

धूप में छावं की तलाश करते है हम

शर्द में गर्म की आस करते है हम

रहना तो जानतें है अकेले भी हम

फिर भी दोस्तों की आश करतें है हम?

दिन तो गुजर जातें है अपने काम ही काम में

घर लौटते है तो आँखे भटकती है दोस्तों की तलाश में

आकाश के सूनेपन में जाकर देखते है दोस्तों की वोह हसी

पलके भीग जाती है और दिल में रह जाती है बेबसी

**किशोर पाठक**